आपातकाल में सृजन फुलवारी

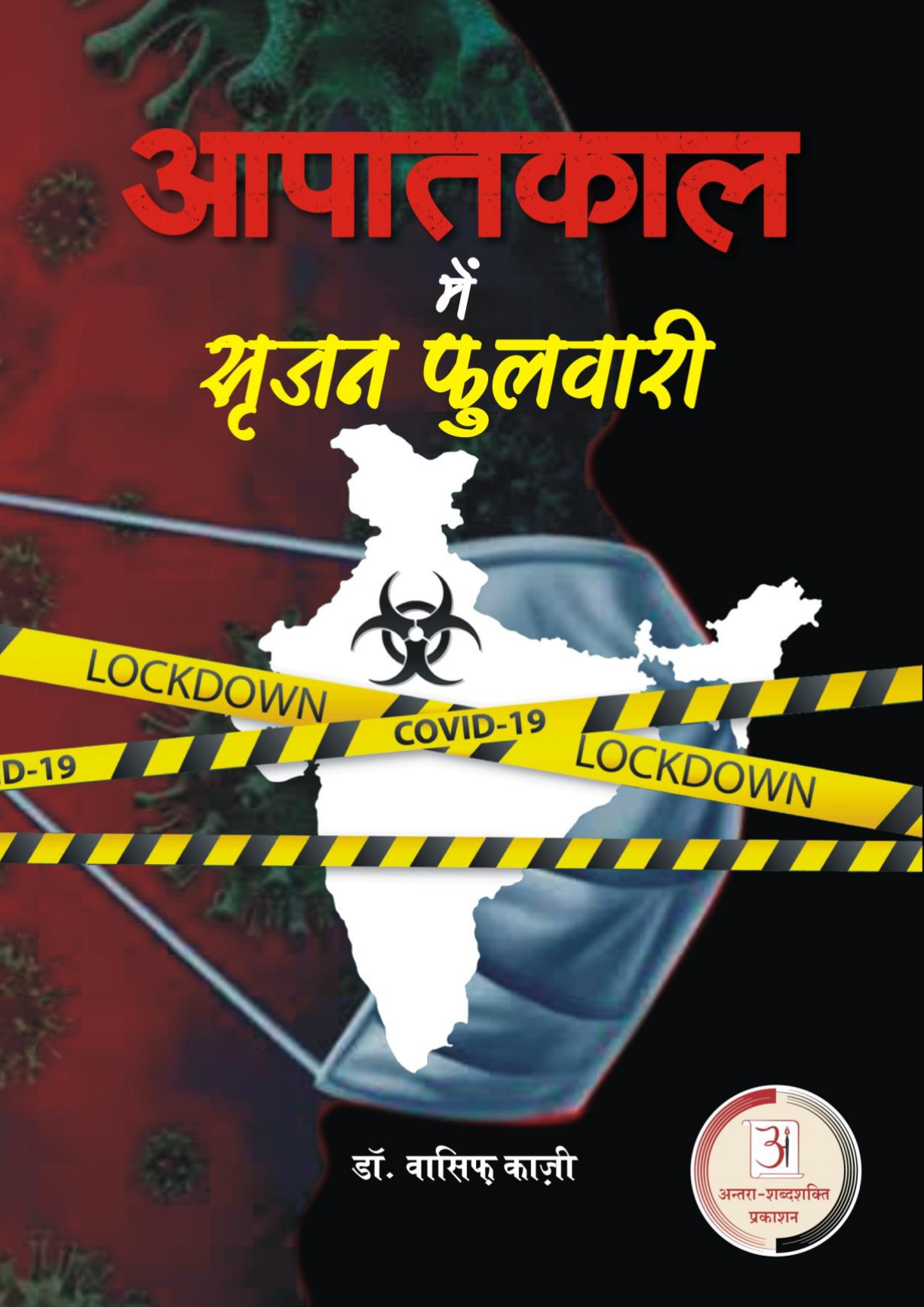

डॉ. वासिफ़ काज़ी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ वासिफ़ काज़ी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-111-4
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, **डॉ वासिफ़ काज़ी**
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY DR. WASIF QAZI
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	मोहब्बत की मिसाल : ताज बेमिसाल	6
2.	माँ	7
3.	तपस्या	8
4.	दिल मे रहना	9
5.	इश्क़ ए वतन	10
6.	मेरी जिंदगी	11
7.	तुझसे प्यार है	12
8.	सुनसान राहें	13
9.	नारी शक्ति	14
10.	प्रेम दिवस	15
11.	लोकतंत्र में पुण्य दान	16
12.	खुशबू	17
13.	पथिक	18
14.	संदेश आगमन	19
15.	सरहदें	20
16.	अंधेरा	21

मोहब्बत की मिसाल : ताज बेमिसाल

बनाकर ताज शाहजहां ने,
दुनिया को तोहफा दिया है।

हर आशिक की यादों में,
मुमताज को जिंदा कर दिया है।।

संगमरमर से तराशा है
मुहब्बत की निशानी को।

जज्बातों से लिख दिया,
प्यार की कहानी को।

मिसाल ए मुहब्बत को,
रूबरू ए दुनिया रख़ दिया है।

हर आशिक की यादों में,
मुमताज को जिंदा कर दिया है।

माँ

ये ज़िन्दगी तेरी अमानत है माँ।
तू एक मुक़द्दस इबादत है माँ।।

तेरे बिना कहाँ मेहफ़ूज़ हूँ मैं।
तुम से ही मेरी हिफ़ाज़त है माँ ।।

ये हीरे, ये दौलत सब बेमोल हैं।
तू ही मेरी अनमोल दौलत है माँ।।

ज़िंदगी में बहारें तुम ही से हैं।
तुझसे ही घर की बरकत है माँ।।

तुझे न देखूँ तो डरता है दिल।
मेरे दिल की तू ही राहत है माँ।।

तुझसे मुक़म्मल है दास्तां ये "काज़ी"।
मेरे दिल की हसरत, रहमत है माँ।।

तपस्या

ये तप, ये दुआएँ ज़ाया नहीं जायेंगी।
कोरोना पर यह ज़रूर फ़तह पायेंगी।।
फ़िर निकलेगा उम्मीदों का सूरज।
खुशियों की फ़सल फिर लहलहायेगी।।

इंसान हुआ क़ैद ख़ुद अपने घरों में।
ये दूरियाँ तो ज़रूर रंग लायेंगी।।
संयम, धैर्य और अनुशासन से तो।
ये वबा भी अब टल जायेगी।।

रोशन होगा चांद रातें भी मुस्कुरायेंगी।
थमी है ज़िन्दगी फ़िर ख़िलखिलायेगी।।
तपस्या और इबादतों का अज्र मिलेगा।
कोरोना की ज़िंदगी ख़त्म हो जायेगी।।

दिल में रहना

दिल में रहना तुम भूला न देना।
मेरे अरमानों को हवा न देना।।

उम्मीद ए वफ़ा समझा है तुमको।
सफ़र ए इश्क़ में दग़ा न देना।।

ख़ुदगर्ज़ी का पैरहन है ये दुनिया।
इसको ज़िस्म पर सजा न लेना।।

मेरे ख़्वाबों के रोशन चराग़ हो।
इन चराग़ों को तुम बुझा न देना।।

तेरे नाम से मेरा वजूद है "काज़ी"।
मेरे नाम से इसको हटा न देना।।

इश्क़ ए वतन

मुल्क की मुहब्बत को अब,
दिल में बसाइये।
जा़त पात भूलकर अब,
एक हो जाइये।।

बंध गए मज़हब हमारे,
रंगों की ज़ंजीर में।
देश प्रेम खो़ गया है,
नफ़रतों की भीड़ में।।

देशभक्ति को दिनों का,
मोहताज मत बनाइये।
खेल में जीते पाकिस्तान तो,
जश्न मत मनाइये।।

मेरी ज़िंदगी

तेरी आंखों में प्यार की कहानी नज़र आती है।
रहबर मेरी ज़िंदगी तेरे पहलू में चैन पाती है।
सरगम सी बजती है कानों में मेरे,
पनघट पर जब तू अपनी पायल खनकाती है।।

तेरा ग़म तो मेरी ज़िंदगी का हिस्सा है।
मेरे हिस्से से भी क्यों ये मिल्कियत चुराती है।
बेकरारियों की इंतहा हुई अब तो,
रहबर मेरी ज़िंदगी तेरे पहलू में चैन पाती है।।

कैसे गुज़रते है दिन मेरे, शामें बेख़बर हैं।
तेरे आने की ख़बर ही मुझे मस्ताना बनाती है।
धड़कनें दिल में हर दम मचाती हैं ग़दर,
रहबर मेरी ज़िंदगी तेरे पहलू में चैन पाती है।।

ये बारिशें, ये बिजलियां, ये बादलों का शोर।
याद ए मेहबूब को सीने में जगाती हैं।
कर्ज़दार है सांसें उसके इश्क़ की "क़ाज़ी",
उन रिश्तों में जीकर उसका क़र्ज़ चुकाती है।।

ये कहानी हमारी आशिकों को दीवाना बनाती है।
रहबर मेरी ज़िंदगी तेरे पहलू में चैन पाती है।।

तुझसे प्यार है

दिल से जुदा नहीं हो तुम,
मेरे ज़ेहन में तेरी यादें हैं।
अधूरी हैं रस्में मोहब्बत की,
पतझड़ से ये तेरे वादे हैं।।

हर सांस मुझे तेरा इंतज़ार है,
सच कहूं मुझे तुझसे प्यार है।।
अहसास ए इश्क सुखन देता है,
विसाल ए यार तो चुभन देता है।

तेरे बिन तो ज़िन्दगी बेकार है,
सच कहूं मुझे तुझसे प्यार है।।
आशिकों से ही इश्क ज़िंदा है,
मिसालें उनकी दी जाती हैं।।

मोहब्बत में कंजूसी नहीं होती,
ये तो ख़ुले दिल से की जाती है।
तेरे बिन कहां दिल को करार है,
सच कहूं मुझे तुझसे प्यार है।।

सुनसान राहें

रास्ते सूने-वीरान पड़े हैं,
प्यार की मंज़िल मिलती नहीं।
दिख़ते हैं इस भीड़ में सब,
एक बस तू ही दिख़ती नहीं।।

जिस्म तो हरक़त में है पर,
सांसें हैं जो चलती नहीं।
रोज़ मिलन की आस में बैठा,
विरह की बेला टलती नहीं।।

दिन न गुज़रता तेरे बिना अब,
सांझ सुहानी ढलती नहीं।
बुझ गये सब इश्क के शोले,
दिल में आग सुलगती नहीं।।

नारी शक्ति

पूजन के जो लायक है,
मंगल और सुखदायक है।
शक्ति- प्रेम की मूरत वो,
त्याग की परिचायक है।।

आज उसकी अस्मिता पर,
होते वज्र प्रहार है।
कोमल -मासूम कलियों का,
दरिंदे करते रोज़ शिकार है।।

कथनी करनी का भेद यहां,
न इज्ज़त न शाबाशी है।
हर वहशी की नज़रों में,
बस हवस और अय्याशी है।।

प्रेम दिवस

दिल में है कुछ छुपा हुआ,
आज होंठों पर हम लायें।

चलो खुशनुमा मौसम में,
प्यार का त्यौहार मनायें।।

ये तो हसीन लम्हा है,
एक-दूजे के हम हो जायें।

दिलों में प्यार इतना भर लें,
हर दिन प्रेम दिवस बन जायें।

लोकतंत्र में पुण्य दान

लोकतंत्र के महापर्व में,
सबको आगे आना है।
मत का अपने कर के दान,
अपना फ़र्ज़ निभाना है।।

सत्ता के इस महासमर में,
सच को ही जिताना है।
झूठे मक्कारों को अब तो,
वापस घर बिठवाना है।।

घोटालों में फंसा है भारत,
छबि इसकी चमकाना है।
कलंक लगाया जो नेताओं ने,
अब उसको हमें मिटाना है।।

ख़ुशबू

तेरे साथ साथ चलूँ मैं,
बस तेरा हो जाऊं।
ज़िंदा रहूं सांसों मे तेरी,
बस तुझमें खो जाऊं।।

बिख़रूं तेरे आग़ोश में,
क़तरा कतरा हो जाऊं।
बरसा दूं आब मोहब्बत का,
बदरा बदरा हो जाऊं।।

इश्क़ तो इम्तिहान है काज़ी,
हार कर भी सिकंदर हो जाऊँ।
तेरे सूफीयाना इश्क में रहकर,
मै भी कलंदर हो जाऊं।।

पथिक

मार्ग की मुसीबतों से अब,
तुझको है ख़ुद लड़ना।
जीवन तेरा कर्म पथ है,
पथिक तुझे है चलना।।

कोई नहीं तुझे राह बताये,
ख़ुद ही आगे बढ़ना।
मंजिलें उम्मीद हैं तेरी,
पथिक तुझे है चलना।।

न घबराना जीवन में तू ,
हर पल साहस रखना।
शूल भी हो मार्ग में तेरे,
पथिक तुझे है चलना।।

स्वदेश आगमन

अदभुत साहस, अदभुत बल है,
अदभुत इच्छाशक्ति भी।
जोश दौड़ता रगों में जिसके,
भारत मां की भक्ति भी।।

अक्षत, रोली, चंदन लेकर,
करते तुमको वंदन है।
हर दिल के स्पंदन तेरा,
पुण्य धरा पर अभिनंदन है।।

अपनी धरती, अपना अम्बर,
जग में अलख निरंजन है।
चाहत के चौराहे पर वंदन,
पुण्य धरा पर अभिनंदन है।।

सरहदें

दर्द देती सरहदें हर पल,
बांट दिया इंसानों को।
दूर किया एक-दूजे से,
बांट दिया ईमानों को।।

दर्द देती सरहदें हर पल,
जुदा हुए अपनों से अपने।
एक ही धरती, एक ही अम्बर,
धूमिल हो गये सारे सपने।।

दर्द देती सरहदें हर पल,
इंसान, इंसान से दूर हुआ।
दो वतन दो ख़्याल हुए हम,
जिस्म,रूह से दूर हुआ।।

अंधेरा

चारों और है गहन अंधेरा।
सोज़ का माहौल है गहरा।।

रौनक़ ग़ायब है गलियों की।
हर चौपाल पर डर का डेरा।।

दिन भी बंजर हैं रातें सूनी।
उदासी का ये कैसा सेहरा।।

साहस से हर काम जमा है।
आशा से आकाश थमा है।।

क़ैद घरों में यूं पंछी बन कर।
इंसान का जीवन ठहरा ठहरा।।

मन तो भागे हिरणा जैसे।
उम्मीदों पर किसका पहरा।।

बदला बदला सा ये समा है।
आशा से आकाश थमा है।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

डॉ. वासिफ़ काज़ी

28/3/2 इकबाल कालोनी,
अहिल्या पल्टन, इंदौर

E-mail - quaziwasif111@gmail.com
Mobile - 6260232309, 8085901021

सृजन, सृष्टि के निर्बाध गतिमान रहने के लिए परमावश्यक है। शब्दों के माध्यम से सृजन का नवसंसार रचना, कवि की प्राथमिकता होती है। व्यस्तता के युग में यदि आत्मनिर्वासित होने का अवसर मिले तो यह चुनौती भरा होता है ऐसे में अंतरा शब्दशक्ति ने रचनाकारों के सृजन को, उनकी कल्पनाओं को पंख दिये। अवसर दिया कुछ लिखने का।

मेरी प्रस्तुत रचनाओं में सभी अलग अलग विषयों पर केन्द्रित लघु काव्य रचनाएँ हैं जिसमें ताजमहल का सौंदर्य, मां का ममत्व, दुआ आपदा के खात्मे के लिए, मुल्क से मोहब्बत, जिन्दगी का फलसफा आदि रचनाएँ मौजूद है।

उम्मीद है मेरे अल्फाज मेरी आवाज लोगों तक पहुंचेंगे।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-111-4

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/